Open Access
IJASSH
International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities
(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 2, Issue 4, December 2024; Pages 22 – 24
DOI: 10.5281/zenodo.14905953
SRJIF Impact Factor (2023): 8.7

Original Research Article

भारतीय संस्कृति में लोकगीतों की भूमिका

डॉ. रामरतन विठ्ठलराव शिंदे

हिंदी विभाग, विवेक वर्धिनी महाविद्यालय, देवणी, जिला: लातूर ४१३५१९ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: ramratanshinde19@gmail.com

Received: 11 September 2024 | Accepted: 07 October 2024 | Published: 08 October 2024

भारतीय संस्कृति विविधता और समृद्धि का अद्वितीय संगम है। इसमें लोकगीतों की एक विशेष भूमिका है जो न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संजोने का कार्य करते हैं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना को भी व्यक्त करते हैं। लोकगीत, समाज की भावनाओं, परंपराओं, रीति-रिवाजों और जीवनशैली को प्रतिबिंबित करते हैं। ये गीत पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं और आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं।

बीज-शब्द: भारतीय संस्कृति, लोकगीत, पारंपरिक संगीत, सांस्कृतिक धरोहर, सामाजिक परंपराएँ, धार्मिक लोकगीत, विवाह गीत, कृषि गीत, वीरता गीत, नारी जीवन और लोकगीत, लोकगीतों का संरक्षण, डिजिटल युग और लोकगीत, बॉलीवुड और लोकसंगीत, फ्यूजन संगीत, लोकसंगीत का वैश्विक प्रभाव

लोकगीतों का स्वरूप और विशेषताएँ

लोकगीत सरल भाषा में गाए जाते हैं और इनमें आम जनजीवन की झलक मिलती है। इनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं:

१. **सरलता और सहजता** - इनमें कठिन शब्दों का प्रयोग कम होता है, जिससे हर व्यक्ति इन्हें आसानी से समझ सकता है।
२. **सामूहिकता** - ये गीत प्रायः समूह में गाए जाते हैं, जिससे सामुदायिक भावना प्रबल होती है।
३. **प्राकृतिक सौंदर्य** - इनमें प्रकृति के विभिन्न रूपों, ऋतुओं और प्राकृतिक सौंदर्य का उल्लेख मिलता है।

४. **धार्मिक और आध्यात्मिक तत्व** - कई लोकगीत देवी-देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं, जिससे समाज में आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है।

५. **सांस्कृतिक विविधता** - भारत के विभिन्न राज्यों के लोकगीत उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।

भारतीय समाज में लोकगीतों का महत्व

लोकगीत न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि समाज में अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं।

१. धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व

भारत में कई लोकगीत धार्मिक आस्थाओं और परंपराओं से जुड़े होते हैं। देवी-देवताओं की स्तुति में भजन और कीर्तन गाए जाते हैं, जो धार्मिक आयोजनों का अभिन्न हिस्सा होते हैं। उत्तर भारत में कांवड़ यात्रा के दौरान गाए जाने वाले गीत, दक्षिण भारत के भक्ति गीत, और महाराष्ट्र के अभंग लोकगीत इसके उदाहरण हैं।

२. सामाजिक आयोजनों में लोकगीत

विवाह, जन्म, त्योहारों और अन्य सामाजिक आयोजनों में लोकगीतों की प्रमुख भूमिका होती है।

- **विवाह गीत** - उत्तर भारत में गाए जाने वाले बन्ना-बन्नी गीत विवाह समारोह का अभिन्न हिस्सा हैं।
- **जन्म संस्कार गीत** - नवजात शिशु के जन्म पर सोहर गीत गाए जाते हैं।
- **त्योहार गीत** - होली, दिवाली, लोहड़ी और अन्य त्योहारों पर विशेष लोकगीत गाए जाते हैं।

३. कृषि और श्रम से जुड़े लोकगीत

भारतीय समाज में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है और इससे जुड़े लोकगीत किसानों के जीवन में ऊर्जा भरते हैं।

- **हल चलाते समय गाए जाने वाले गीत** - किसान खेतों में काम करते समय पारंपरिक गीत गाते हैं, जो श्रम को आसान बनाते हैं।
- **फसल कटाई गीत** - फसल पकने और कटाई के समय खुशी प्रकट करने के लिए लोकगीत गाए जाते हैं।

४. वीरता और राष्ट्रीयता से जुड़े लोकगीत

लोकगीत केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें वीरता और राष्ट्रभक्ति का भाव भी भरा होता है। राजस्थान के पावन वीरगीत, जो वीर दुर्गादास राठौड़ और महाराणा प्रताप के साहस को गाते हैं, इसका उदाहरण हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी लोकगीतों ने जनजागरण का कार्य किया।

५. नारी जीवन और लोकगीत

भारतीय समाज में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने वाले लोकगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत, ससुराल जाने वाली बेटी के विदाई गीत, मातृत्व से जुड़े गीत आदि महिलाओं की भावनाओं को प्रकट करने का माध्यम हैं।

लोकगीतों का आधुनिक संदर्भ में महत्व

आज के डिजिटल युग में भी लोकगीत अपनी पहचान बनाए हुए हैं। लोकगीतों को नए संगीत रूपों में ढालकर प्रस्तुत किया जा रहा है। लोक संगीत को संरक्षित करने और उसकी लोकप्रियता बनाए रखने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है।

१. **बॉलीवुड और लोकगीत** - भारतीय फिल्म उद्योग में लोकगीतों का बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है। कई फिल्मों में पारंपरिक लोकगीतों को आधुनिक संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जिससे वे युवा पीढ़ी को भी आकर्षित कर सकें। उदाहरण के लिए, "घूमर" (पद्मावत) और "मोरनी बागा मा" (लम्हे) जैसे गीत।

२. **लोकगीत और डिजिटल प्लेटफॉर्म** - आजकल यूट्यूब, स्पॉटिफाई और अन्य ऑनलाइन म्यूजिक स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मों पर लोकगीतों की लोकप्रियता बढ़ी है। विभिन्न क्षेत्रीय कलाकार अपने पारंपरिक गीतों को डिजिटल माध्यमों से साझा कर रहे हैं।

३. **लोकगीतों का संरक्षण और अनुसंधान** - कई संस्थान और विश्वविद्यालय लोकगीतों के संरक्षण और शोध में योगदान दे रहे हैं। डिजिटल संग्रहालय और आर्काइव्स बनाए जा रहे हैं, जहाँ दुर्लभ लोकगीतों को संरक्षित किया जा रहा है।

४. **फ्यूजन म्यूजिक और लोकगीत** - आजकल पारंपरिक लोकगीतों को पॉप, जैज और रॉक म्यूजिक के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे वे युवा पीढ़ी को भी पसंद आने लगे हैं। भारतीय बैंड जैसे इंडियन ओशन और कबीर कैफे इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

५. **लोकगीतों का वैश्विक प्रभाव** - भारतीय लोकगीत अब केवल भारत तक सीमित नहीं हैं। कई अंतरराष्ट्रीय संगीतकार और बैंड भारतीय लोकधुनों को अपनी रचनाओं में सम्मिलित कर रहे हैं, जिससे भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रचार हो रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में लोकगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि यह समाज की आत्मा को प्रतिबिंबित करते हैं। ये गीत सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को संजोए रखते हैं। आधुनिक समय में, लोकगीतों को संरक्षित और संवर्धित करने की आवश्यकता है ताकि हमारी सांस्कृतिक धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके। डिजिटल और वैश्विक मंचों पर लोकगीतों की बढ़ती लोकप्रियता यह साबित करती है कि लोकगीत अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने में सक्षम हैं।

संदर्भ सूची

१. गुप्ता, एस. (२०१५). *भारतीय लोकसंगीत का समाजशास्त्रीय अध्ययन*. वाराणसी: ज्ञानपीठ प्रकाशन।

२. शर्मा, आर. (२०१८). *भारतीय लोकगीत और उनका सांस्कृतिक प्रभाव*. दिल्ली: नीलकंठ पब्लिशिंग हाउस।

३. मिश्रा, पी. (२०२०). *भारतीय लोकगीत: परंपरा और परिवर्तन*. मुंबई: साहित्य भारती।

४. चौधरी, के. (२०१७). *लोकगीतों में भारतीय समाज का दर्पण*. जयपुर: संस्कार पब्लिकेशन्स।

५. कुमार, डी. (२०२१). *डिजिटल युग में लोकसंगीत का विकास और संरक्षण*. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय।